मुकरियां

तारकेश्वरी ' सुधि

गहने,कपड़े जो दूँ उसको।
बड़े प्रेम से रखती सबको।
वह है लम्बी, चौड़ी, भारी।
क्या प्रिय, सजनी?ना, अलमारी।

ऊँच नीच का भेद न जाने।
बस अपनापन ही पहचाने।
वह है खुशियों का प्रतिपालक।
क्या सखि, साजन?ना सखि, बालक ।

रात चाँदनी उसे निहारूँ।
उसके ऊपर मन को वारूँ।
कसता और प्रेम का फंदा।
क्या सखी, साजन?ना सखि, चंदा।

रोम-रोम में वह बसता है।
मेरे सारे दुख हरता है।
जीवन नैया वही खिवैया।
क्या सखि, साजन?नहीं,कन्हैया ।

उसको काले मोती भाये ।
वह जग की सब गाथा गाये ।
उसके सम्मुख झुकता मस्तक।
क्या सखि, साजन?ना सखि, पुस्तक।

जो भी पूछूँ झट बतलाता।
हर पल मेरे मन को भाता।
मददगार रहता वह हरपल।
क्या सखि, साजन? ना सखि, गूगल।

उसके साए में सो जाऊँ।
तन-मन मे शीतलता पाऊँ।
लगता जैसे कोई मुनिवर।
क्या सखी, साजन?ना सखि, तरुवर।

गोदी में सिर रख कर सोती।
क्षण में अपने सब गम खोती।
हर पल उसका साथ सुहाता।
क्या सखी, साजन?ना सखि, माता।

बेचैनी वह मुझमे भरता।
मुझको पानी- पानी करता।
कर दे मुश्किल मेरा जीना।
क्या सखि, साजन?नहीं,पसीना।

अक्सर आँखों में बस जाता।
उसके साथ बहुत रस आता।
वह तो मेरा ही है अपना।
क्या सखि, साजन? ना सखि, सपना।

जयपुर

ISSN:2583-8849